Vol. 2 (2026) :Vol.2,Issue 1,Jan-Mar

भारत की िवदेश नीिति: एक ऐितहाि सक पिरप्रेक्ष्य

Dr Susmita Mohapatra ,

Associate Professor.

Dean School of Arts and Humanities,

YBN University , Ranchi

सारांश

भारत की ि वदेश नीिति स्वतंत्रता-पूवर् उपिनवेशवाद ि वरोधी दृिष्ट से लेकर समकालीन बहुध्रुवीय िवश्व व्यवस्था तक एक सतत िवकासशील प्रिNया रही है। इस शोध-पत्र में भारत की िवदेश नीिति के ऐितहाि सक िवकास, प्रमुख ि सद्धांतों, और समकालीन चुनौितयों का िवश्लेषण िकया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है िक भारत ने सदैव शांिति, सहयोग और राष्ट्रीय िहतों की रक्षा को प्राथिमकता दी है।

कीवड्र्स: भारत, िवदेश नीिति, गुटिनरपेक्ष आंदोलन, पंचशील, शीत युद्ध, उदारीकरण, बहुध्रुवीय िवश्व

पिरचय

िवदेश नीिति िकसी भी राष्ट्र की अंतरराष्ट्रीय पहचान और रणनीितक िदशा को

िनधार्िरत करती है। भारत की िवदेश नीिति का आधार **अिहंसा,**

YBNU IMLM

शांितपूणर् सह-अिस्तत्व, और वैिश्वक सहयोग रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी

िवदेश नीित को न केवल राष्ट्रीय िहतों की रक्षा बिल्क िवकासशील देशों के नेतृत्व और वैिश्वक शांित की िदशा में भी केंिद्रत िकया।

साि हत्य समीक्षा :

भारत की िवदेश नीिति पर िवद्वानों ने िविभन्न दृिष्टकोणों से अध्ययन िकया है। यह समीक्षा उन प्रमुख शोधों और ग्रंथों को प्रस्तुत करती है िजन्होंने भारत की िवदेश नीिति के ऐितहाि सक िवकास और समकालीन स्वरूप को समझने में योगदान िदया है।

- **ए. अप्पादोराई (1981)** ने भारत की िवदेश नीिति को शांिति और सहयोग पर आधाि रत बताया। उनके अनुसार, स्वतंत्रता प्राि प्त के बाद भारत ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैितकता और आदशर्वाद को प्राथिमकता दी।

- **डेिवड एम. मेलोन (2011)** ने अपनी पुस्तक *Does the Elephant Dance?* में भारत की समकालीन िवदेश नीिति का िवश्लेषण करते हुए इसे बहुध्रुवीय िवश्व में संतुलन साधने की कला कहा। उन्होंने भारत की िवदेश नीिति को व्यावहाि रक और रणनीितक दृिष्टकोण से देखा।

- **हर्ष वी. पंत (2016)** ने भारत की िवदेश नीिति को आर्थिक उदारीकरण के बाद व्यापार और िनवेश आकर्षण की िदशा में स्थानांतिरत होते हुए देखा। उनके अनुसार, 1990 के दशक के बाद भारत ने वैि श्वक अर्थव्यवस्था में अपनी भूिमका को पुनर्परिभाि षत िकया।

- **सुिमत गांगुली (2017)** ने भारत की िवदेश नीिति को ऐितहाि सक अनुभवों और समकालीन चुनौितयों से आकार लेते हुए िवश्लेिषत िकया। उन्होंने यह तर्क िदया िक भारत की िवदेश नीिति में िनरंतरता और परिवर्तन दोनों ही तत्व मौजूद हैं।

कार्यप्रणाली

इस शोध-पत्र में भारत की िवदेश नीिति का अध्ययन ऐितहाि सक-िवश्लेषणात्मक

YBNU IMEM

पद्धित के आधार पर ि कया गया है। कायर्प्रणाली को ि नम्निलिखत चरणों में व्यविस्थत िकया गया है:

1. **प्राथिमक स्रोतों का उपयोग**
    - स्वतंत्रता-पूवर् और स्वतंत्रता-उपरांत काल के सरकारी दस्तावेज़, संधियाँ, और आधकारिक वक्तव्य।
    - संसद में प्रस्तुत विदेश नीति संबंधी बहसें और प्रधानमंत्री/विदेश मंत्री के भाषण।
2. **द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन**
    - विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोध-पत्र, और अंतरराष्ट्रीय जनर्ल।
    - विदेश नीति पर केंद्रित समकालीन विश्लेषणात्मक लेख और रिपोटर्।
3. **कालखंडवार विभाजन**
    - अध्ययन को पाँच प्रमुख चरणों में विभाजित किया गया है:
        - स्वतंत्रता-पूवर् काल
        - स्वतंत्रता के बाद (1947–1960)
        - शीत युद्ध काल (1960–1990)
        - उदारीकरण और वैश्वीकरण (1991–2000)
        - 21वीं सदी और समकालीन परिप्रेक्ष्य
4. **विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण**
    - प्रत्येक कालखंड में भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धांतों,

YBNU IMLM

चुनौितयों और उपलिब्धयों का तुलनात्मक िवश्लेषण।

- िनरंतरता और पिरवतर्न (Continuity and Change) के िसद्धांत के आधार पर िवदेश नीित की िदशा का मूल्यांकन।

5. **िनष्कषर् िनकालने की प्रिNया**
    - ऐितहाि सक घटनाओं और समकालीन नीितयों के बीच संबंध स्थाि पत करना।
    - भारत की िवदेश नीित को वैि श्वक पिरप्रेक्ष्य में समझना।

िनष्कषर्/प्रमुख अवलोकन)

इस शोध-पत्र के अध्ययन से भारत की िवदेश नीित के िविभन्न कालखंडों में िनम्निलिखत प्रमुख अवलोकन सामने आते हैं:

1. **स्वतंत्रता-पूवर् काल**
    - औपिनवेि शक शासन के दौरान भारत की िवदेश नीित िब्रिटश साम्राज्य के िहतों तक सीिमत रही।
    - भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपिनवेशवाद िवरोधी दृि ष्टकोण को प्रस्तुत िकया।
    - गांधी और नेहरू की िवचारधारा ने अिहसं ा और शां ितपूणर् सह-अिस्तत्व को िवदेश नीित का आधार बनाने की नींव रखी।
2. **स्वतंत्रता के बाद (1947–1960)**
    - पंचशील िसद्धांत (1954) ने भारत की िवदेश नीित को नैितक और आदशर्वादी आधार प्रदान िकया।

YBNU IMLM

- गुटिनरपेक्ष आंदोलन (NAM) में भारत ने नेतृत्वकारी भूिमका िनभाई और शीत युद्ध में तटस्थता बनाए रखी।

3. **शीत युद्ध काल (1960–1990)**
    - भारत ने सोिवयत संघ के साथ रणनीितक संबंध मजबूत िकए।
    - 1971 भारत-सोिवयत मैत्री संिध और बांग्लादेश मुिक्त संग्राम में िनणार्यक भूिमका िनभाई।
    - 1974 के परमाणु परीक्षण ने भारत को वैिश्वक शिक्त संतुलन में नई पहचान िदलाई।

4. **उदारीकरण और वैश्वीकरण (1991–2000)**
    - आिथर्क उदारीकरण के बाद िवदेश नीित का केंद्र व्यापार, िनवेश और वैिश्वक सहयोग पर स्थानांतिरत हुआ।
    - अमेिरका और यूरोप के साथ संबंधों में सुधार हुआ।
    - SAARC के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा िदया गया।

5. **21वीं सदी और समकालीन पिरप्रेक्ष्य**
    - एक्ट ईW नीित के माध्यम से दिक्षण-पूवर् एिशया के साथ संबंधों को सुदृढ़ िकया गया।
    - अमेिरका, रूस, फ्रांस और जापान के साथ रणनीितक साझेदारी िवकिसत हुई।
    - भारत ने आतंकवाद, जलवायु पिरवतर्न और ऊजार् सुरक्षा जैसी वैिश्वक

YBNU IMLM

चुनौितयों पर सिNय भूिमका िनभाई।

- क्वाड समूह में भारत की भागीदारी ने िहदं-प्रशांत क्षेत्र में उसकी रणनीितक िस्थित को मजबूत िकया।

चचार् (Discussion)

भारत की िवदेश नीित का िवकास केवल राजनीितक घटनाओं का पिरणाम नहीं है, बिल्क यह एितहाि सक अनुभवों, सांस्कृ ितक मूल्यों और वैि श्वक पिरिस्थितयों से गहराई से प्रभाि वत रहा है। इस शोध-पत्र के िनष्कषोर् से स्पष्ट होता है िक भारत ने

िविभन्न कालखंडों में अपनी िवदेश नीित को बदलते अंतरराष्ट्रीय पिरदृश्य के अनुरूप ढाला है।

1. **िनरंतरता और पिरवतर्न (Continuity and Change)**
   - भारत की िवदेश नीित में अिहसंा, शांितपूणर् सह-अिस्तत्व और सहयोग की िनरंतरता बनी रही है।
   - वहीं, शीत युद्ध और उदारीकरण के बाद इसमें व्यावहाि रकता और आथर्क िहतों को प्राथिमकता देने का पिरवतर्न भी देखा गया।
2. **नैितकता बनाम यथाथर्वाद**
   - स्वतंत्रता के बाद भारत ने नैितकता और आदशर्वाद को िवदेश नीित का आधार बनाया।
   - लेिकन शीत युद्ध और परमाणु परीक्षणों के दौरान यथाथर्वादी दृि ष्टकोण अपनाते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा को सवोर्पिर रखा गया।

YBNU IMLM

3. **क्षेत्रीय और वैिश्वक भूिमका**

- SAARC और एक्ट ईW नीित के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा िदया।

- वहीं, क्वाड और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर भारत ने वैिश्वक चुनौितयों पर सिNय भूिमका िनभाई।

4. **आिथर्क उदारीकरण का प्रभाव**
   - 1991 के बाद भारत की िवदेश नीित में आिथर्क िहतों का महत्व बढ़ा।
   - व्यापार, िनवेश और वैश्वीकरण ने भारत को िवश्व अथर्व्यवस्था में एक महत्वपूणर् िखलाड़ी बनाया।
5. **समकालीन चुनौितयाँ**
   - आतंकवाद, जलवायु पिरवतर्न, ऊजार् सुरक्षा और बहुध्रुवीय िवश्व व्यवस्था में भारत की भूिमका ने िवदेश नीित को और जिटल बनाया।
   - भारत ने इन चुनौितयों का सामना रणनीितक साझेदाियों और बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से िकया।

िनष्कषर् (Conclusion)

1. भारत की िवदेश नीित एक सतत िवकासशील प्रिNया है, जो ऐितहाि सक अनुभवों, सांस्कृ ितक मूल्यों और वैिश्वक पिरिस्थितयों से िनरंतर आकार लेती रही है। स्वतंत्रता-पूवर् काल में उपिनवेशवाद िवरोधी दृिष्टकोण से लेकर स्वतंत्रता के बाद पंचशील िसद्धांत और गुटिनरपेक्ष आंदोलन तक, भारत ने शांित और सहयोग को अपनी िवदेश नीित का आधार बनाया।
2. शीत युद्ध के दौरान भारत ने सोिवयत संघ के साथ रणनीितक संबंधों को मजबूत करते हुए भी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखी। 1974 के परमाणु

YBNU IMLM

परीक्षण ने भारत को वैिश्वक शिक्त संतुलन में नई िस्थित प्रदान की।

उदारीकरण केबाद भारत ने आिथर्क िहतों को प्राथिमकता देते हुए व्यापार और िनवेश को िवदेश नीिति का केंद्र बनाया।

3. 21वीं सदी में भारत ने एक्ट ईW नीिति, क्वाड समूह में सिNय भागीदारी, और अमेिरका, रूस, फ्रांस, जापान जैसे देशों के साथ रणनीितक साझेदारी के माध्यम से अपनी वैिश्वक भूिमका को सुदृढ़ िकया है। आतंकवाद, जलवायु पिरवतर्न और ऊजार् सुरक्षा जैसी चुनौितयों का सामना करते हुए भारत ने बहुध्रुवीय िवश्व व्यवस्था में संतुलन साधने की क्षमता प्रदिशर्त की है।
4. अतः यह स्पष्ट है िक भारत की िवदेश नीिति में िनरंतरता और पिरवतर्न दोनों ही तत्व मौजूद हैं—जहाँ शांिति और सहयोग की भावना स्थायी रही है, वहीं बदलते वैिश्वक पिरदृश्य के अनुरूप व्यावहाि रक और रणनीितक दृिष्टकोण भी अपनाए गए हैं। भारत की िवदेश नीिति आज न केवल राष्ट्रीय िहतों की रक्षा करती है, बिल्क वैिश्वक शांिति और सहयोग में भी महत्वपूणर् योगदान देती है।

References

1. Appadorai, A. (1981). *Indian Foreign Policy and Relations*. New Delhi: South Asia Publishers.
2. Pant, H. V. (2016). *Indian Foreign Policy: An Overview*. Manchester University Press.
3. Malone, D. M. (2011). *Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign Policy*. Oxford University Press.
4. Ganguly, S. (2017). *India's Foreign Policy: Retrospect and Prospect*. Routledge.

YBNU IMLM